विश्वविद्यालयी केंद्रीय मूल्यांकन – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

नागेन्द्र कुमार*

शिक्षा में मूल्यांकन अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, इसके बिना शिक्षा की प्रक्रिया पूर्ण नही होती है, मूलयांकन के आधार पर ही यह पता चलता है कि विद्यार्थी ने क्या और कितना सीखा। परीक्षा सीखे गये ज्ञान का ही मूल्यांकन करती है। आज विद्यार्थी परीक्षा देते हैं, परंतु उन्होंने वास्तव में प्रश्न का उत्तर क्या लिखा है? क्या मूल्यांकनकर्ता इसका सही मूल्यांकन करते हैं? विश्वविद्यालीय परिदृश्य में मूल्यांकन के वास्तविक परिदृश्य को प्रस्तुत करने के लिए शोधकर्त्ता ने यह अध्ययन किया है। इसमें वर्तमान के केंद्रीय मूल्यांकन के औचित्य को ध्यान में रखकर अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन ने शिक्षा जगत में तीन तरह के मूल्यांकनकर्ताओं को स्थापित किया है। प्रस्तुत शोधपत्र शिक्षाविदों को मूल्यांकन के संदर्भ में एक नयी सोच विकसित करने में एक आधार प्रदान करेगा।

शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक गत्यात्मक प्रक्रिया है। गत्यात्मक प्रकृति की वजह से शिक्षा के क्षेत्र में समय–समय पर भिन्न–भिन्न प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न होती रहती हैं, जो शिक्षाविदों के सम्मुख नयी–नयी चुनौतियों को प्रस्तुत करती रहती हैं। इनके समाधान के लिए शिक्षा प्रक्रिया से संबंधित विभिन्न व्यक्तियों को इनके संबंध में तरह–तरह के निर्णय लेने पड़ते हैं। वस्तुतः शिक्षाशास्त्री, शैक्षिक प्रशासकगण, प्रधानाचार्य, अध्यापक, अभिभावक तथा विद्यार्थी आदि अनेक व्यक्ति शिक्षा प्रक्रिया से घनिष्ठ एवं प्रत्यक्ष रूप से संबंधित रहते हैं। इनमें से कुछ व्यक्ति शिक्षा प्रक्रिया से संबंधित विभिन्न प्रकार की नीतियों तथा योजनाओं का निर्धारण करते हैं, कुछ व्यक्ति

* *प्राध्यापक*, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह पी. जी. कॉलेज, सिंगरामऊ, जौनपुर, (उ. प्र.)

(जैसे- छात्र तथा अध्यापक) शिक्षण–अधिगम की वास्तविक प्रक्रिया में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेकर शिक्षा योजनाओं को वास्तविक रूप में क्रियान्वित करते हैं, तथा कुछ अन्य व्यक्ति (जैसे–अभिभावक तथा समाज का जागरूक वर्ग) शिक्षा प्रक्रिया के भावी परिणामों के प्रति जागरूक तथा चिंतित रहते हैं। हम जानते हैं कि समय–समय पर शिक्षा प्रक्रिया से संबंधित तरह–तरह की समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं। किसी भी समस्या का सही समाधान अधिकांशत: उस समस्या से संबंधित विभिन्न परिस्थितियों की जानकारी पर निर्भर करता है। नि:संदेह किसी समस्या से संबंधित सूचना की पर्याप्तता (Sufficienty), संदर्भता (Relevancy) तथा यथार्थता (Accuracy) ही उस समस्या के सही समाधान की दिशा में एक अत्यंत आवश्यक तथा प्रथम कदम होता है। समस्याओं के संबंध में सूचना की पर्याप्तता, संदर्भता तथा यथार्थता को सुनिश्चित करने के लिए ही व्यावहारिक विज्ञानों में मापन तथा मूल्यांकन की विभिन्न विधियों के प्रयोग की आवश्यकता होती है। शैक्षिक मापन तथा मूल्यांकन तार्किक ढंग से शैक्षिक निर्णय लेने के लिए आवश्यक सूचना को वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय एवं वैध ढंग से उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

मापन–मूल्यांकन का संप्रत्यय

मापन–मूल्यांकन शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं इनके बिना शिक्षा का कोई अस्तित्व ही नही है। वैदिककालीन, मुगलकालीन, बौद्धकालीन इत्यादि शिक्षा प्रणालियों में भी मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया के रूप में मौजूद था। शिक्षा सीखने–सिखाने की एक प्रक्रिया है। सीखने–सिखाने में मूल्यांकन अपने आप ही आ जाता है, जो चीज़ हम सिखा रहे हैं, बच्चे ने उसे सीखा अथवा नहीं, यह हमें मूल्यांकन के द्वारा ही पता चलता है।

शैक्षिक प्रक्रिया में मूल्यांकन वह अंग है जिसके द्वारा शिक्षण प्रक्रिया का मूल्यांकन किया जाता है एवं साथ ही निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किस हद तक हुई, मूल्यांकन के द्वारा ही पता चलता है। प्राचीन तथा मध्यकाल में विद्यार्थियों के ज्ञान का मापन मौखिक प्रश्न पूछकर किया जाता था।

व्यक्तियों के बौद्धिक तथा अन्य मनोवैज्ञानिक गुणों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन 10वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही प्रारंभ हो सका। ऐस्कन्यूरल, सीगुइन, वुन्ड, फ्रांसिस गाल्टन, जे. एम. कैटल, गिलबर्ट, अल्फ्रेड बिने, इत्यादि ने विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की रचना करके विभिन्न अध्ययनों में प्रयुक्त किया, इन सबके द्वारा विभिन्न गुणों को मापा गया। इन परीक्षणों के आधार पर व्यक्तियों को उसकी क्षमता के विषय में पता चलता है, मूल्यांकन के लिए आधार मापन ही है। मापन को अगर वैज्ञानिक शब्दावली के आधार पर देखा जाए तो मापन अंकन है।

एस. एस. स्टीवेन्स (1946) के अनुसार ''मापन किन्ही स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है।'' अत: कहा जा सकता है कि मापन में व्यक्तियों अथवा वस्तुओं को ऐसे शब्द, अंक, अक्षर, अथवा संकेत प्रदान किये जाते हैं जो उन व्यक्तियों या वस्तुओं

में उपस्थित संदर्भित गुण के प्रकार को अथवा मात्रा की अभिव्यक्ति कर सकें। मापन से प्राप्त अंकों को मूल्य प्रदान कर देना मूल्यांकन कहलाता है। विद्यर्थियों का मूल्यांकन परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर किया जाता है। मूल्यांकन ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को उसकी क्षमता के विषय में बताती है, जब कोई व्यक्ति अपनी की हुई मेहनत के अनुसार परिणाम प्राप्त करता है तो उसे लगता है कि उसका मूल्यांकन सही हुआ। आज शिक्षा के क्षेत्र में मापन ही मूल्यांकन हो गया है। बच्चे ने परीक्षा में जितने अंक पाए उसी के आधार पर उसका मूल्यांकन कर दिया जाता है। अनेक बार ऐसा होता है कि प्रयोगात्मक परीक्षाओं में अनेक प्रकार के 'आग्रहों' के कारण जाति-धर्म, भाई-भतीजावाद, वार्ड के आधार पर अंक दिये जाते हैं। लिखित परीक्षाओं में कॉपियों के सही मूल्यांकन के लिए शिक्षाविदों ने केंद्रीय मूल्यांकन कराने का सुझाव दिया। लगभग सभी विश्वविद्यालयों ने इसे अपना भी लिया है एवं साथ ही कोडिंग-डिकोडिंग की भी व्यवस्था कर दी है। परंतु क्या यह व्यवस्था प्रभावी है? क्या इस पद्धति के द्वारा सही मूल्यांकन हो रहा है? इन प्रश्नों के समाधान के लिए ही शोधकर्ता ने यह अध्ययन करने का प्रयास किया है।

समस्या कथन

विश्वविद्यालयी केंद्रीय मूल्यांकन - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

विश्वविद्यालयी मूल्यांकन में केंद्रीय मूल्यांकन पद्धति की उपादेयता का अध्ययन करना।

शोधविधि - प्रस्तुत अध्ययन के लिए सर्वे विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या - प्रस्तुत अध्ययन के लिए उ. प्र. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के शिक्षक जनसंख्या के रूप में परिभाषित किये गये।

न्यादर्श - प्रस्तुत अध्ययन के लिए उ. प्र. के सात विश्वविद्यालयों (पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर; दी. द. उ. विश्वविद्यालय, गोरखपुर; रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली; म. गॉ. काशी विद्यापीठ, वाराणसी; लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ; झाँसी विश्वविद्यालय; डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा एवं उनसे संबद्ध महाविद्यालयों से 300 शिक्षकों को चयनित किया गया था।

उपकरण- प्रस्तुत अध्ययन के लिए स्वनिर्मित संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

दत्त संकलन प्रक्रिया - शोधकर्ता ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में मूल्यांकन कार्य करते हुए विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के 300 शिक्षकों से साक्षात्कार प्रपत्र के आधार पर आँकड़े एकत्र किए।

परिणाम- आँकड़ों के विश्लेषणोपरांत निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. **क्या आप केंद्रीय मूल्यांकन को सही मानते हैं?**

   इस पर 90 प्रतिशत शिक्षकों ने हाँ पर सहमति जताई, और कहा केंद्रीय मूल्यांकन

ही होना चाहिए। इससे प्रोफ़ेसर और पहुँच वाले शिक्षकों के दायरे से हटकर सभी शिक्षकों को मूल्यांकन का मौका मिला है और इसमें शिक्षक किसी भी प्रकार के दबाव से मुक्त होकर मूल्यांकन कार्य करता है।

2. आप एक दिन में कितनी कॉपियों की जाँच पसंद करेंगे?

इस कथन के जवाब में केवल 20 प्रतिशत लोगों ने 100 कॉपियों तक सहमति जतायी, 60 प्रतिशत शिक्षकों ने 200 तक, एवं 20 प्रतिशत शिक्षकों ने 300 एवं उससे ऊपर तक सहमति जतायी।

100 कॉपियों तक सीमित रहने वाले अध्यापकों ने कहा कि इससे अधिक कॉपियाँ हम नहीं जाँच सकते, क्योंकि इससे अधिक कॉपियों का मूल्यांकन करने पर हम विद्यार्थियों के साथ न्याय नहीं कर सकते। इतने में ही 6 से 8 घंटे लग जाते हैं।

200 कापियाँ मूल्यांकित करने वाले शिक्षकों में अधिकांशतः बाह्य मूल्यांकनकर्त्ता थे, जिन्होंने यह बताया कि प्रातः 8 से सायं 8 बजे तक मूल्यांकन कार्य होना चाहिए। हम केवल D.A. के अतिरिक्त लाभ के लिए कई दिन तक रुक कर कार्य नहीं कर सकते। यह आंतरिक परीक्षक ही कर सकते हैं। 300 एवं इससे अधिक कॉपियों को मूल्यांकित करने वाले शिक्षकों ने कहा कि मूल्यांकन में क्या है? 'पेज पलटो और नंबर रखो।' लिखावट अच्छी हो तो 55–60 प्रतिशत अन्यथा 40–50 प्रतिशत तक नंबर देते हुए निकलते चलो। 100 कॉपियाँ जाँचने में क्या फायदा, फेल तो किसी को करना नहीं है, ये अपना सीधा-सा फंडा है।

3. आपको एक कॉपी जाँचने में कितना समय लगता है?

20 प्रतिशत शिक्षकों ने 4 से 5 मिनट, 60 प्रतिशत शिक्षकों ने 3 मिनट, 20 प्रतिशत शिक्षकों ने 1 से 1.5 मिनट बताया।

4. क्या आप मूल्यांकन करते समय कॉपियों को ध्यान से पढ़ते हैं?

केवल 20 प्रतिशत ने ही सही ढंग से कॉपियों को पढ़कर मूल्यांकन कार्य को स्वीकारा। 30 प्रतिशत ने कहा कि शीर्षक और लिखावट देख ली जाती है, पूरी कॉपी को पढ़ने की क्या आवश्यकता? हेडिंग से ही सब समझ आ जाता है। 50 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि कॉपी पढ़ने की क्या आवश्यकता है? अगर पढ़कर मूल्यांकन कार्य किया जायेगा तो 50 प्रतिशत बच्चे फेल हो जाएँगे। 40 प्रतिशत बच्चे द्वितीय और तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण होगें। केवल 10 प्रतिशत ही 60 प्रतिशत के पार जा पाएँगे।

5. क्या आप बच्चों को गलत उत्तर लिखे रहने पर भी पास कर देते हैं?

10 प्रतिशत से 20 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि क्या किया जाये अगर कॉपी में कुछ भी विषय से संबंधित होता है तो पास ही किया जाता है फेल बड़ी मुश्किल से! 80 से 90 प्रतिशत ने कहा कि पास करना

मजबूरी है, 'इनको फेल करो और कोर्ट-कचहरी का चक्कर लगाओ।'

संस्कृत और अंग्रेज़ी के शिक्षकों ने तर्क दिया कि इन विषयों को तो सभी बच्चे पढ़ते नहीं हैं, जिन्होंने इन विषयों को चयनित किया है अगर उन्हें फेल कर दिया जाये तो हम लोगों का वर्चस्व ही खत्म हो जाऐगा। संस्कृत के एक शिक्षक ने कहा कि सही लिखे या गलत, हम कभी फेल नहीं करते। यही क्या कम है कि बच्चे ने हिम्मत करके संस्कृत विषय चुना है।

समाजशास्त्र और राजनीति शास्त्र के शिक्षकों ने कहा कि इस विषय में बच्चे फेल ही नहीं हो सकते। बच्चे समाज और राजनीति से अच्छी तरह परिचित हैं। इसमें उनकी कॉपियों को क्या पढ़ना? हम लिखी हुई कॉपियों पर फेल नहीं करते।

भूगोल, शिक्षाशास्त्र, अर्थशास्त्र वाले शिक्षकों ने कहा कि बच्चे वैसे ही इन विषयों में बहुत कम होते हैं। फेल कर देने से हमी को तो नुकसान होगा। **इतिहास** के शिक्षकों का तर्क - इतिहास में जो लिख दिया सब सही, किसने देखा है इतिहास को!

बी. एड. के शिक्षकों ने जो तर्क दिए वे इस प्रकर थे - बी. एड. प्रवेश परीक्षा जो प्रदेश स्तरीय की होती है, उसे ये सब पास करके आते हैं। यह व्यवसायिक पाठ्यक्रम है इसमें फेल करना उचित नहीं है।

विज्ञान के शिक्षकों ने अनुत्तीर्ण न करने के संबंध में यह तर्क दिया कि अगर विषय से संबंधित कुछ भी लिखा है तो पास करना मज़बूरी है, क्योंकि विज्ञान विषय में दाखिला वही बच्चे लेते हैं जो इंजीनियरिंग और मेडिकल में नहीं जा पाते। इंजीनियरिंग में तो बेकार से बेकार बच्चों को बुलाकर दाखिले दिये जा रहे हैं तो सामान्य बी.एससी. कौन करेगा। ऐसे हमें भी तो अपना अस्तित्व कायम रखना है!

अधिकांशत: शिक्षक यही कहते हुए पाये गये कि यदि हम फेल करेंगे तो आगे बच्चे विषय ही नहीं लेंगे और तब हमारे विषय की कॉपियाँ कम हो जाएँगी, अर्थात् हमारा 'कोटा' कम हो जाएगा।

केंद्रीय मूल्यांकन इस उद्देश्य या भावना से शुरू हुआ कि कॉपियाँ सही ढंग से मूल्यांकित होंगी। शिक्षक ही बच्चों की कापियों को मूल्यांकित करेंगे। उनके परिवार वाले, शोध छात्र, विद्यार्थी आदि नहीं। शिक्षक जब कॉपियों का मूल्यांकन करेंगे तो बच्चों के साथ न्याय होगा। जो जैसा लिखेगा वैसे अंक पाएगा। परंतु शिक्षकों ने केंद्रीय मूल्यांकन में अपने-अपने रिश्तेदारों, परिचितों की कॉपियाँ ढूँढ़कर नंबर बढ़वाने का सिलसिला जारी किया। इस परेशानी से निजात पाने के लिए विश्वविद्यालयों ने कोडिंग व्यवस्था शुरू की। अब 90 प्रतिशत शिक्षकों ने एकदम तटस्थ रुख अपना लिया है कि विद्यार्थियों को फेल नहीं करना है।

क्या सही मूल्यांकन का मूल उद्देश्य यही है कि सभी विद्यार्थी उत्तीर्ण हो जाएँ। अच्छे और कमज़ोर बच्चों में कोई फर्क न रह जाए। मूल्यांकन का वास्तविक उद्देश्य है जो जैसा कॉपी में लिखता है, उसके आधार पर अंक पाये, अथवा उसका जैसा प्रदर्शन है उस आधार पर उसे अंक मिलें। जब अधिक मेहनत करने वाले और कम मेहनत करने वाले विद्यार्थी लगभग समान प्राप्तांक प्राप्त करते हैं तो परिश्रमी और पढ़ाई के प्रति ईमानदार विद्यार्थी ठगा हुआ महसूस करता है और कुंठित होता है, इसलिए उसका मन, मेहनत करके पढ़ाई करने से उचटता है और वह सोचता है कि दिन-रात परिश्रम करने से क्या फायदा! जो विद्यार्थी बिना परिश्रम किए हुए ही लगभग हमारे बराबर ही अंक प्राप्त करते हैं और व्यंग्य भरे अंदाज़ में कहते हैं कि देखा तुम लोग दिन-रात रगड़ते हो लेकिन नंबर हमारे ही बराबर पाए हैं। हमने तो कहानी लिखकर कॉपी भर दी थी, नंबर भी ठीक मिले हैं। तो पढ़ाई के प्रति गंभीर और निरंतर अध्ययनशील विद्यार्थी का मन कहीं न कहीं आहत होता है। इतना ही नहीं, जो विद्यार्थी बिना स्वाध्याय और परिश्रम के उत्तीर्ण होते चले जाते हैं, उनके मन में यह बात बैठ जाती है कि शिक्षक कॉपियों का बिना पढ़े ही मूल्यांकन करते हैं तो पढ़ने से क्या लाभ!

यदि वास्तव में विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारना है, और उन्हें कुंठित होने से बचाना है एवं साथ ही लापरवाह बच्चों को (जो पढ़ाई से विरत होने लगे हैं जबकि उनमें वह क्षमता विद्यमान है, केवल आवश्यकता है सही दिशा प्रदान करने की) पढ़ाई की तरफ मोड़ने की आवश्यकता है तो मूल्यांकन को सार्थक दिशा प्रदान करने की भी आवश्यकता है।

सुझाव

1. प्रयोगात्मक विषयों में अंक प्रदान करने की प्रणाली खत्म करके केवल ग्रेड प्रदान किए जाएँ, क्योंकि इन विषयों में 'परिचयवाद' चलता है तथा प्रयोगात्मक परीक्षा के नाम पर विद्यर्थियों का शोषण किया जाता है।
2. लिखित परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं की मूल्यांकन दर कम से कम ₹ 25.00 की जाए। एक दिन में अधिकतम 100 कॉपियों का ही मूल्यांकन कार्य हो।
3. शिक्षकों के मूल्यांकन केंद्र पर कम से कम आठ घंटे कार्य करना अनिवार्य हो। दो-दो घंटे के अंतराल पर 25-25 कॉपियाँ प्रदान की जाएं।
4. दिन में मूल्यांकन केंद्र पर बेहतर जलपान की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे व्यक्ति पूर्ण मनोयोग से कार्य कर सके।
5. मूल्यांकन केंद्र पर ठहरने के लिए बेहतर सुविधा प्रदान की जाए।
6. मूल्यांकन केंद्र पर वरिष्ठ मूल्यांकनकर्ता भी नियुक्त किए जाएँ, जो प्रत्येक शिक्षक के बंडल से कुछ कॉपियों को निकालकर जाँचें, जिससे शिक्षकों में एक डर बना रहे और वे सही ढंग से मूल्यांकन कार्य करें।
7. 50 प्रतिशत कॉपियाँ आंतरिक मूल्यांकन कर्त्ताओं से एवं 50 प्रतिशत कॉपियों की जाँच बाह्य मूल्यांकनकर्ताओं से कराई जाए।

हमारी शिक्षा प्रणाली में मूल्यांकन प्रणाली अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मूल्यांकन प्रणाली के द्वारा हम विद्यार्थी को फिर से सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इस प्रणाली के द्वारा तीव्र बुद्धि, सृजनात्मक शक्ति वाले विद्यार्थियों को हम कुछ नया, नये ढंग से करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। गुणात्मक ह्रास को रोकने के लिए शिक्षा में प्रवेश प्रक्रिया और मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक विश्वसनीय बनाने की आवश्यकता है। यदि हमें बेहतर मानव संसाध न तैयार करने हैं तो हमें शिक्षा प्रक्रिया की मूल्यांकन प्रणाली को बेहतर बनाना ही होगा, इसके आधार पर शिक्षकों की जवाबदेही भी तय हो जाएगी।

संदर्भ

कपिल, एच. के. 1975. *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

गुप्ता, एस. पी. एंड अलका. 2005. *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

फिडलर, वी. 1996. स्ट्रेटजिक प्लानिंग फ़ॉर स्कूल इम्प्रूवमेंट. लंदन, पिटमैन

बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. 1997. *रिसर्च इन एजुकेशन.* प्रेंटिस हॉल, न्यू जर्सी

साफिया, आर. एन. एंड शायदा बी. डी. 1992. *स्कूल ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन एंड आर्गनाइजेशन.* धनपति राय एंड संस दिल्ली।

रेडी, जी. एस. 2007. *करेंट इश्यूज़ इन एजुकेशन.* नील कमल, हैदराबाद

http:\\www.unesco.org

http:\\www.ugc.ac.in

http:\\www.ncert.nic.in

http:\\www.education.nic.in